आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 2/मार्च 2023
Received:15/03/2023; Published:24/03/2023

कहानी

अपॉइन्टमेंट

- डॉ. रेनू यादव

ग्रेटर नोएडा

'माफ़ कीजिए सर, गेस्ट लिस्ट में सिर्फ आपका नाम है, इसलिए सिर्फ आप अंदर आ सकते हैं, बाकी लोग नहीं' – गार्ड ने लिस्ट में नाम देखकर मिस्टर रविन्द्र एवं उनके परिवार को वेडिंग हॉल के गेट पर रोकते हुए कहा।

'तो क्या हुआ ? यह मेरे दोस्त की बहन की शादी है। वह ख़ुद हमें इन्वाइट करने आया था' - मिस्टर रविन्द्र ने तपाक गर्व से कहा और सामने से हट जाने का ईशारा किया किंतु गार्ड उनकी तरफ ध्यान न देते हुए अन्य मेहमानों का नाम लिस्ट में देख देख-कर अत्यंत विनम्रता से उनका अभिवादन करता रहा।

यह देख कर मिस्टर रविन्द्र अपमानित महसूस करने लगें किंतु अपने आपको सम्भालते हुए फिर से कहा, 'मेरा इन्विटेशन कार्ड देख सकते हो। मेरे प्रिय मित्र रोहन ने दिया है। मैं शादी में नहीं जाऊंगा तो कौन जायेगा' !

साथ ही मन खीझ उठा कि रोहन का फ़ोन भी नहीं मिल रहा कि उससे बात करके बताया जा सके। आते-जाते मेहमानों की नज़रें गेट पर खड़े परिवार पर जा टिकतीं, उनकी नज़रों में भले ही जिज्ञासा हो किंतु मिस्टर रविन्द्र और उनके परिवार को वे नज़रें चुभती-सी प्रतीत हो रही थीं। गार्ड ने इन्विटेशन कार्ड देखते हुए कहा, 'सर, माफ कीजिए। इस पर सिर्फ आपका नाम लिखा है, कहीं भी फैमिली या फैमिली मेम्बर का नाम नहीं लिखा है। इसीलिए आपका हृदय स्वागत है लेकिन फैमिली...'

'अरे... ऐसे कैसे मैं अपनी फैमिली को छोड़ कर अंदर चला जाऊँ, जाओ अपने साहब से बात करो और उन्हें बताओं की मैं आया हूँ'। मिस्टर रविन्द्र अपने गुस्से पर नियंत्रण नहीं रख पा रहे थे, गुस्सा छिपाने के लिए पीछे मुड़कर देखा तो उनके बुढ़े माता-पिता उल्टे पाँव पार्किंग की ओर लौटते हुए दिखे। मिसेज रेखा अपनी सात साल की बेटी प्रिया के साथ असमंजस में थोड़ी दूर पर खड़ी थीं कि माता-पिता के साथ पार्किंग में जाए अथवा पति के साथ खड़ी रहें। यह देख कर मिस्टर रविन्द्र भी पार्किंग की ओर बढ़ गए।

गाड़ी में गहरी खामोशी छायी थी । शायद सभी एक ही तरह से पीड़ा और अपमान महसूस कर रहे थे लेकिन कोई किसी से कुछ नहीं कह रहा था, बस प्रिया रह-रह कर सिसक उठती। इस शादी में शामिल होने के लिए उसे कितना तो उत्साह था, एक महिने पहले ही उसने अपनी पिंक गाऊन खरीदवा लिया था और हर रोज़ उसे पहन पहन कर देखती कि वह उस गाउन में कितनी अच्छी लग रही है।

रोहन रवि का बहुत अच्छा दोस्त था, घर आता जाता रहता, रवि के माता-पिता ने कभी भी उसे अपने बेटे से कम नहीं माना। रोहन जब चाहे तब फ़ोन करता और आ धमकता और रवि का पूरा परिवार खुले दिल से उसका स्वागत करता। जब वह शादी में आमंत्रित करने आया था तब सभी परिवार के बीच में बैठे रवि की ओर देखते हुए उसने कहा था, 'यार, शादी में ज़रूर आना'।
यह बात आज रवि को याद आ रही है। उस समय उसने समझा था कि समस्त परिवार को आमंत्रित किया गया है इसलिए इन्विटेशन कार्ड को ध्यान से पढ़ना जरूरी भी नहीं समझा। पर दोस्त का परिवार तो अपना परिवार होता है फिर ऐसा क्या हो गया कि... । यह सब पहले से समझ पाना उसकी कल्पना से बाहर था।

रवि के गाँव में चाहे किसी के भी घर में शादी हो, पूरा का पूरा गाँव क्या... आस पास के गाँव वाले भी शादी में उलट पड़ते हैं। गाँव के किसी और घर में खाना बनना तो दूर, रात भर लोग सोते तक नहीं। 'साथी हाथ बढ़ाना' के तर्ज पर मर्द हाथों-हाथ बारात सम्भाल लेते हैं और औरतें घर के अंदर रश्मों-रिवाजों को निभाने में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेती हैं। वहाँ तो दोस्तों के न पहुँचने पर नाराज़गी होती है!

घर में पहुँच कर रेखा ने बेमन से अपने भारी-भरकम कपड़े और गहनों को उतारा। उसके आग्रह करने पर भी माता-पिता ने कुछ नहीं खाया। रवि ने हँसते हुए उन्हें समझाया, 'आप लोग दुःखी न हों। ये दिल्ली है, यहाँ के विषय में ज्यादा जानकारी नहीं थी। वैसे रोहन मिलेगा तो मैं उसका कान खींच कर पूछुँगा'। कहते हुए अपने चेहरे की शिकन छुपाने के लिए लाइट ऑफ करके सो गया।

दूसरे दिन दोपहर बारह बजे रेखा ने घर के सारे काम निपटा कर अपनी प्रिय दोस्त रिंकी को फ़ोन किया। दिल्ली आने के बाद दोनों की मुलाकात हुई थी, दोनों बहुत जल्दी आत्मीय बन गईं। वे एक-दूसरे के सुख-दुःख में तत्काल खड़ी हो जातीं। दोनों को एक-दूसरे पर हक़ जताना खूब आता।

रेखा ने भारी मन से बीती रात की कथा रिंकी को सुनाई। रिंकी ने गम्भीरता से सुनकर उसे जवाब दिया, 'यह दिल्ली का कल्चर है। सिर्फ दिल्ली ही नहीं जहाँ भी कार्पोरेट कल्चर है वहाँ ऐसा होता है। इसमें दुःखी होने या अपमान जैसी कोई बात नहीं'।
रिंकी के समझाने के बाद भी रेखा आश्वस्त नहीं हो पा रही थी कि दोस्तों में भी कोई फॉर्मेलिटीज़ होती है क्या ? यदि फॉर्मेलिटी है तो दोस्ती काहे का ? गाँव में सबके दरवाजे एक-दूसरे के लिए खुले रहते हैं, बेधड़क जाकर पूरे हक़ के साथ गलबहियाँ डालकर बतियाया जा सकता है, खाना खाया जा सकता है, किसी भी

त्योहार-उत्सव में एक-दूसरे का हाथ बँटाया जा सकता है । लेकिन यहाँ तो छोटी से छोटी बात के लिए दोस्तों से भी फ़ोन करके अपॉइन्टमेंट लेना पड़ता है !

बात ही बात में रिंकी ने बताया कि उसके पिता की तबीयत ठीक नहीं, एम्स में डॉक्टर का अपॉइन्टमेंट तीन महिने बाद मिला है, फिलहाल वह उन्हें गंगाराम हॉस्पीटल में दिखा रही है । अपॉइन्टमेंट से रेखा को याद आया कि आज तो प्रिया के स्कूल में पैरेन्ट्स-टीचर की मीटिंग का टाइम-स्लॉट मिला हुआ है, अब तो बस पन्द्रह मिनट ही बाकी हैं । इतनी देर में तो वह मीटिंग में पहुँच ही नहीं पायेगी । उसने तुरन्त रिंकी को पी.टी.एम. का स्लॉट बताकर फ़ोन डिस्कनेक्ट कर रवि को फ़ोन मिलाया और उन्हें पी.टी.एम.में पहुँचने के लिए कहा । रवि का ऑफिस प्रिया के स्कूल के बगल में होने के कारण वह वहाँ जल्दी पहुँच सकता है, किंतु ऑफिस का काम तत्काल छोड़कर निकलना मुश्किल है, क्योंकि आज उसका कुछ क्लाइंट के साथ अपॉइन्टमेंट है । रेखा ने उनसे निवेदन किया कि इस बार की मीटिंग अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, किसी भी तरह से वे मीटिंग अटेन्ड कर लें । यदि मीटिंग अटेंड नहीं किया तो अगले पी.टी.एम. तक इंतज़ार करना पड़ेगा ।

रेखा अन्दर ही अन्दर कूढ़ रही थी कि यह कैसी जगह है जहाँ प्रेम, दोस्ती, एहसास की कोई जगह नहीं । यहाँ सिर्फ समय ही नहीं बल्कि संवेदनाएँ भी अपॉइन्टमेंट के टाइम-स्लॉट में बँटी हुई है । उसे याद आया कि फ़ोन डिस्कनेक्ट करते समय उसने रिंकी के पिता जी के विषय में पूछा ही नहीं कि उन्हें क्या हुआ है ? तीन चार दिनों तक वह रिंकी को फ़ोन लगाती रही लेकिन उसने फ़ोन नहीं उठाया । फिर उसने रिंकी और अपनी कॉमन फ्रेंड नीता से पता लगाया कि रिंकी की तबीयत बहुत खराब है । शायद उसे हाई-फीवर है इसलिए फ़ोन नहीं उठा रही । रिंकी की तबीयत खराब होने का सुनकर वह तड़प उठी और उससे मिलने पहुँच गई । उसके घर में कुल मिलाकर दो ही जने तो हैं और दोनों ही बीमार । ऐसे समय में यह साथ नहीं देगी तो भला कौन देगा ! जाते समय साथ में घर से खाना भी बनाकर लेती गई ताकि रिंकी को खाना बनाने की दिक्कत न हो ।

रिंकी के घर का डोर-बेल बजाने पर हाऊस-हेल्पर दरवाजा खोली । रेखा हड़बड़ाकर पूछ बैठी, 'रिंकी को क्या हुआ है, तबीयत ज्यादा तो खराब नहीं ? अब कैसी है वह ?

हाउस हेल्पर ने बड़े आराम से जवाब दिया, 'मैं दीदी से आपके आने का बता देती हूँ' ।

यह कह कर वह अंदर गई और थोड़ी देर बाद वापस आकर उसने जवाब दिया, "दीदी की तबीयत ठीक नहीं है, उन्होंने कहा है कि आप किसी और दिन आ जायें' ।

'क्या ! मैं कोई गेस्ट हूँ जो खातीरदारी करने पड़ेगी ! जाकर बोलो मैं उसी के लिए आयी हूँ, उसके लिए खाना भी बनाकर ले आयी हूँ' ।

'अच्छा... मैं दीदी से पूछ कर आती हूँ'

रिंकी उसे किसी और दिन आने के लिए कह सकती है ! उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था । ऐसे समय में दोस्त ही दोस्त के काम आते हैं । एक हमारा गाँव है जहाँ किसी को कुछ हो जाए तो पूरा का पूरा

गाँव मरीज के साथ हॉस्पीटल पहुँच जाता है । हॉस्पीटल में पेसेन्ट को कोई और एडमिट करवाता है, दवाईयाँ कोई और खरीदता है और घर से हॉस्पीटल में रह रहे लोगों के लिए कोई और अपने घर से खाना बनवा कर ले आ रहा होता है । थोड़ी-थोड़ी जिम्मेदारी बँटने से दुःख भी कम लगने लगता है । एक यह जगह है कि पूछना पड़ रहा है कि मैं तुम्हारे लिए आयी हूँ घर में आऊँ या नहीं ! शायद यही वज़ह है कि यहाँ घर के बगल में कई-कई दिनों तक लोग मर कर पड़े रहते हैं और कोई उन्हें देखने नहीं जाता । क्या शहर मानवीय संवेदना का पददलन करके खड़ा होता है ?

अचानक दरवाजा खुलने से उसकी तंद्रा टूटी और हाऊस-हेल्पर फिर से वही बात दुहराई, 'मैडम, दीदी ने अंदर आने से बिल्कुल मना कर दिया है । उन्होंने कहा है कि अगली बार आप फ़ोन करके आइएगा' ।

रेखा ने टिफीन आगे बढ़ाते हुए दुखी मन से कहा, 'अच्छा... कोई बात नहीं । (उसके आँखों में आँसू भर गए) ये खाना तो ले...'

वह कह ही रही थी कि दरवाजा धड्ड से बंद हो गया, टिफीन हाथ से छूट कर नीचे ठन्न से गिर कर झनझना गया और खाना फर्श पर बिखर गया ।

****